पाठ – 2 फसलों का त्योहार

अतिरिक्त कार्य :–

मकर संक्रांति का त्यौहार

(जिन राज्यों में मनाया जाता है : उत्तर प्रदेश , मध्य प्रदेश , बिहार)

भारत देश में हर साल 2000 से अधिक त्यौहार मनाये जाते है| इन सभी त्योहारों के पीछे महज सिर्फ परंपरा या रूढि बातें नहीं होती है| हर एक त्यौहार के पीछे छुपी होती है ज्ञान, विज्ञान, कुदरत, स्वास्थ्य और आयुर्वेद से जुड़ी तमाम बातें | हर साल 14 या 15 जनवरी को हिन्दूओं द्वारा मनाये जाने वाला त्यौहार मकर संक्रांति को ही लें | तो यह पौष मास में सूर्य से मकर राशि में प्रवेश करने पर मनाया जाता है | वैसे तो संक्राति साल में 12 बार हर राशि में आती है | लेकिन मकर और कर्क राशि में इसके प्रवेश पर विशेष महत्व है | जिसके साथ बढती गति के चलते मकर में सूर्य के प्रवेश से दिन बड़ा तो रात छोटी हो जाती है | जबकि कर्क में सूर्य के प्रवेश से रात बड़ी और दिन छोटा हो जाता है | मकर संक्रांति किसानों के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण होती है, इसी दिन सभी किसान अपनी फसल काटते है | मकर संक्रांति भारत का सिर्फ एक ऐसा त्यौहार है जो हर साल 14 या 15 जनवरी को ही मनाया जाता है | यह वह दिन होता है जब सूर्य उत्तर की ओर बढ़ता है | हिन्दूओं के लिए सूर्य एक रोशनी, ताकत और ज्ञान का प्रतीक होता है. | मकर संक्रांति त्यौहार सभी को अँधेरे से रोशनी की तरफ बढ़ने की प्रेरणा देता है | एक नए तरीके से काम शुरू करने का प्रतीक है | मकर संक्रांति के दिन, सूर्योदय से सूर्यास्त तक पर्यावरण अधिक चैतन्य रहता है, यानि पर्यावरण में दिव्य जागरूकता होती है, इसलिए जो लोग आध्यात्मिक अभ्यास कर रहे है, वे इस चैतन्य का लाभ उठा सकते है |

बिहु का त्यौहार

भारत के सभी राज्य के कुछ अपने त्योहार भी है जो राज्य में मनाए जाते हैं। बिहु भारत के असम राज्य में मनाया जाने वाला त्योहार है। यह त्योहार फसल की कटाई से जुड़ा है जो कि साल में तीन बार मनाया जाता है और तीनों बार अलग अलग कृषि चक्र को दर्शाता है। यह त्योहार हर स्थान पर असम प्रवासियों के द्वारा मनाया जाता है। बिहु का त्योहार असम के लोगों में खुशी और उत्साह भर जाता है। इस दिन नारियल को लड्डू, तिल की बर्फी आदि मुख्य व्यंजन के रूप में बनाए जाते हैं। यह त्योहार पूरी तरह से कृषि और फसलों से जुड़ा हुआ है। बिहु का अपना सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व है। यह पर्व असम को उत्साह से भर जाता है और असम की एकता को दिखाता है। यह पर्व असम के लोगों की भावनाओं से जुड़ा हुआ है।

बिहु के प्रकार- बिहु अलग अलग समय पर मनाया जाता है और अलग अलग नाम से जाना जाता है।

1.रंगोली बिहू या बहोग बिहु- यह बिहू हिंदु कलैंडर को मुताबिक वैशाख के महीनै में मनाया जाता है और यह साल का पहला बिहु है। इस समय वसंत रितु का आगमन होता है और सब जगह नए पत्ते और फूल होते हैं। रोंगाली बिहु के पहले दिन लोग पूजा और दान करते हैं और इस दिन नए कपड़े पहनते हैं।

2. भोगाली बिहु या माघ बिहु- यह पौष मार की सक्रांति को मनाया जाता है और इस दिन अग्नि देवता की पूजा की जाती है। बम्बू से मंदिर के आकार की कृति बनाई जाती है जिसे स्नान के बाद सम्मान पूर्वक जलाया जाता है।

3. कोंगाली बिहु- कोंगाली बिहु कार्तिक माह में मनाया जाता है और इस दिन कोई आनंद नहीं मनाया जाता है। इस दिन तुलसी के पौधे के नीचे दीप लगाए जाते है।

**** इन त्योहारों के बारे में जो जानकारी दी गई है उसे अच्छी तरह पढ़कर याद करें ।**